कर्मों के भेद :— जैन दर्शन में मुख्य रूप से कर्मों के दो भेद किये गये हैं — (1) घातीय या नाशवान कर्म। (2) अघातीय या अनाशवान कर्म।

(1.) घातीय या नाशवान कर्म :— जैन दर्शन में घातीय या नाशवान कर्म के पुनः चार भेद बतलाये गये हैं :— (क) ज्ञानावरणीय (ख) दर्शनावरणीय (ग) अन्तराय (घ) मोहनीय।

(क) ज्ञानावरणीय कर्म :— ये कर्म मति, श्रुति, अवधि, मनः पर्याय और केवल को प्रभावित करते हैं।

(ख) दर्शनावरणीय कर्म :— ये कर्म चाक्षुष तथा अचाक्षुष प्रत्यक्ष के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं। इनके कारण ही निद्रा, गहरी निद्रा, अशान्त निद्रा, अत्यन्त अशान्त निद्रा, नींद में चलना आदि का उद्भव होता है।

(ग) अन्तराय कर्म :— ये कर्म लाभ, दान, भोग, उपभोग, तथा शक्ति में बाधक होते हैं।

(घ) मोहनीय कर्म :— इस कर्म के अन्तर्गत दर्शन मोहनीय कर्म तथा चरित्र मोहनीय कर्म आते हैं। दर्शन मोहनीय कर्मों से सद्विश्वास, असद् विश्वास तथा सदा सद्-विश्वास कर्म प्रभावित होते हैं। चरित्र मोहनीय कर्मों से कषाय वेदनीय तथा अकषाय वेदनीय कर्मों पर प्रभाव पड़ता है। कषाय वेदनीय कर्म के अन्तर्गत लोभ, क्रोध, दम्भ तथा माया आते हैं। वही अकषाय वेदनीय कर्म के अन्तर्गत हास्य, राग, द्वेष, भय, घृणा, दुःख, स्त्री-कामुकता, पुरुष-कामुकता तथा नपुंसक की कामुकता आते हैं।

Scanned with CamScanner